मिशन शिक्षण संवाद

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित गणित का जादू का

काव्य रूप

गणित

IV

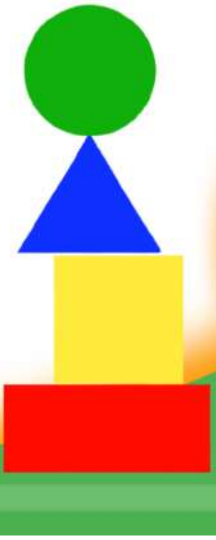

काव्य निर्माण

रश्मि शुक्ला (स०अ०)

शासकीय उत्कृष्ट प्रा० वि० निसरपुर,

ब्लॉक- पानसेमल, जिला- बड़वानी इंदौर

राज्य- मध्य प्रदेश

ईंटों से बनी इमारत

आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ,
इमारतें हिंदुस्तान की।
कोई लम्बी, कोई तिरछी,
कोई है अलग पहचान की॥

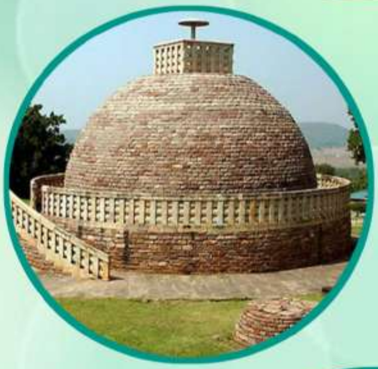

गोल मटोल, ईंट-पत्थर से,
बनी है यह दीवार।
कहीं नज़र आये मेहराबें,
तो कहीं पे त्रिभुजाकार॥

इमारतों का है होता है,
अपना अलग ही पैटर्न।
दीवारों का भी है होता है,
अलग-अलग फैशन॥

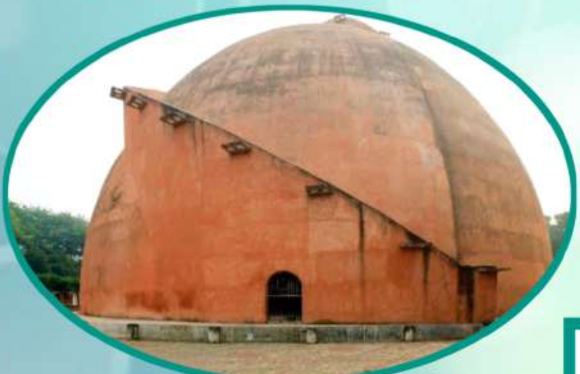

बच्चों मकान में पक्के इमारतें की,
बुनियाद रहती है।
घरों के दीवार पर आज भी,
संस्कृति की छाँव दिखती है॥

लम्बा और छोटा

रेखा गणित की बात है खास,
आओ सीखे बिंदु का राज।
सूक्ष्म चिन्ह बिन्दु को जानो,
न लम्बाई न चौड़ाई मानो॥

बिंदु रेखा तलों के गुण,
ज्यामिति सिखाती सम्पूर्ण।
बिंदु से बिंदु मिलती जाए,
नई आकृति बनती जाए॥

बिन्दु का अपना न कोई आकार।
वह तो मानो है निराकार॥

भोपाल की सैर

बस चली रे बस चली,
बच्चों को लेकर भोपाल चली।

जरा सैर-सपाटा हो जाए,
बच्चों को मजा आ जाए।
यही सोच मैडम भी चली,
बस चली रे बस चली ॥

नाव में बैठकर तालाब की सैर की,
इधर-उधर घूम कर जन्नत की सैर की।

सारा दिन घूम कर गुफा,
पर्वत और इमारतें देखी।
खूब खाया, खूब पिया जी,
जी भर करके मजा किया जी ॥

टिक-टिक-टिक

घड़ी बोले टिक-टिक-टिक,
समय न गँवाना अधिक।
झटपट अपना काम करो,
पढ-लिख कर जग में नाम करो ॥
घड़ी बोले टिक-टिक-टिक,
समय न गँवाना अधिक।

जल्दी उठो! सूरज निकला,
सुई है बोले 10 बज गया।
जल्दी से तैयार होके,
घड़ी है बोले स्कूल को जा ॥
घड़ी बोले टिक-टिक-टिक,
समय न गँवाना अधिक।

कल करे सो आज कर,
आज करे सो अब।
मेहनत पे अपने भरोसा रख,
सब ठीक करेगा रब ॥
घड़ी बोले टिक-टिक-टिक,
समय न गँवाना अधिक।

बेसिक काव्य सृजन मिशन शिक्षण संवाद

गणित (IV) पाठ - 5

दुनिया कुछ ऐसी दिखती है

आओ बच्चों दुनिया घूमे,
पर बताओ कैसे घूमे।

बाहर फैली महामारी,
इससे बचना हमारी जिम्मेदारी।

तो क्यूं ना इस बार नक्शे में,
घूमने आओ बच्चों दुनिया घूमे।

किस शहर की कितनी दूरी,
नक्शा देता इसकी जानकारी।

देखो नक्शे में इस बार,
वहाँ पर है दिल्ली का दरबार।

दिल्ली है भारत की राजधानी,
प्रसिद्ध वहाँ का कुतुब मीनार।

चलो देखो यह हमारा मध्य प्रदेश,
इसकी राजधानी है भोपाल।

सब की आपस में बहुत दूरी है,
कैसे जाएं हाय यह मजबूरी है।

इसीलिए हम घूमने नक्शे में इस बार,
बोलो बच्चों घूमना चाहोगे न बार-बार।

कबाड़ी वाली

गुणा गणित का हिस्सा है,
न मानो इसे समस्या है।
गुणा करना एक कला है,
आओ सीखें आज गुणा है॥

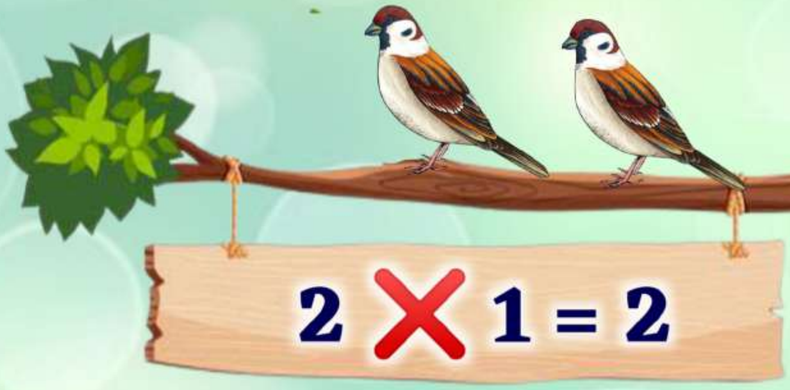

गुणा में संख्या बढ़ती जाए,
बार-बार जोड़ने की प्रक्रिया गुणा कहलाए।
एक पेड़ पर थीं दो चिड़ियाँ,
और आ गईं फिर दो चिड़ियाँ॥

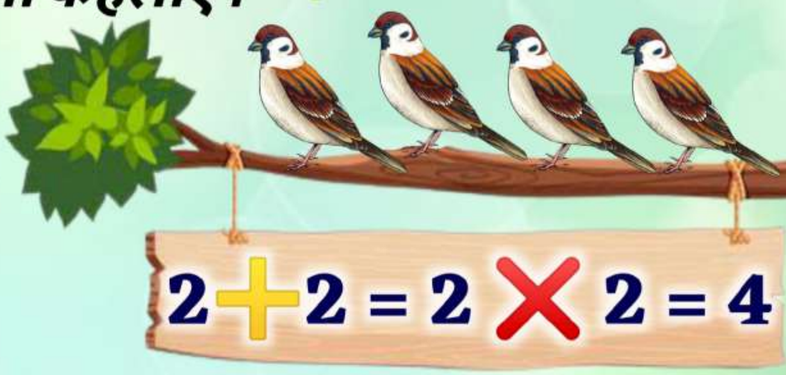

फिर से आ बैठी दो चिड़ियाँ,
बोलो बच्चों! कितनी चिड़ियाँ?
बार-बार जब जोड़ते जाएँ,
यही प्रक्रिया गुणा कहलाए॥

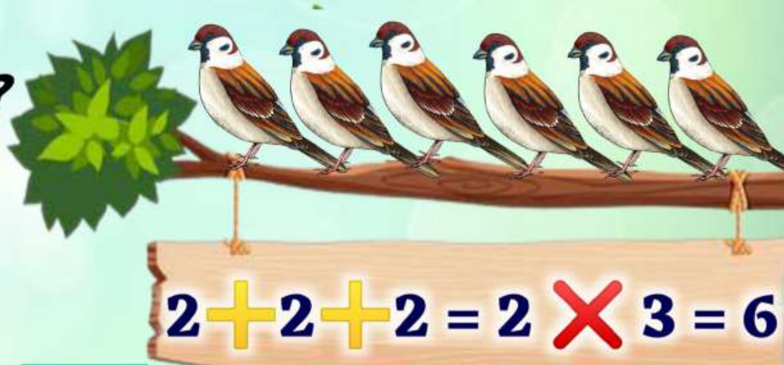

जग मग, जग मग

आओ बच्चों सीखें मापन,
छोटी सी यह बात है कॉमन।

जब तुम बाजार जाते हो,
दूध, तेल, घी लाते हो।
वह भार जिससे मापा जाए,
बच्चों! वह लीटर कहलाए॥

मापन की है अलग-अलग इकाई,
लीटर, किलोग्राम, मीटर खास कहलाई।
आओ बच्चों सीखो मापन,
छोटी सी यह बात है कॉमन॥

गाडियाँ व पहिए

भाग - 1

चिप्पू, नैना, अरीबा, ने,
बनाकर देखी आकृति गोलाकार।
आसपास भी देखी तुमने,
बहुत सी वस्तुएँ गोलाकार ॥

अच्छा पहले तुम बताओ,
नाम वस्तुओं के गोलाकार।
आओ अब तुम बैठ यह जानो ,
आकृति में गोलाकार ॥

गाड़ी के पहिए, चूड़ी, बिंदिया,
होती हैं सब गोलाकार।
पेंसिल, चॉक, तार, रस्सी से,
बना सकते आकृति गोलाकार ॥

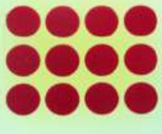
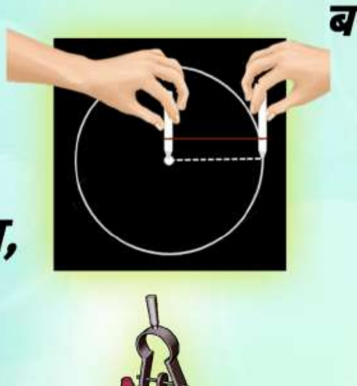

भाग - 2

दलजीत ने परकार से बनाया,
आकृति देखो वृत्ताकार।
परकार के बगैर भी क्या ?
तुम बना सकते आकृति गोलाकार ॥

रस्सी के दोनों सिरों पर,
नुकीली कीलें बांध या तार।
फर्श पर बना कर देखो,
छोटी-बड़ी आकृति वृत्ताकार ॥

जिस रस्सी या तार के सिंरे से,
बनाया तुमने आकृति गोलाकार।
उसकी लंबाई ही होती है,
अर्धव्यास या त्रिज्या यार ॥

टेप की सहायता से भी तुम,
नाप सकते वस्तुएँ वृत्ताकार।
अलग-अलग गाड़ियों के पहियों का,
जान सकते तुम अर्धव्यास ॥

आधा और चौथाई

भिन्न की नई परिभाषा,
बच्चों आओ तुम्हें सिखाएँ।
किसी वस्तु को समान बाँटे,
वह समान भाग भिन्न कहलाए ॥

भिन्न

$$\frac{X}{Y}$$

X → अंश
Y → हर

आधा

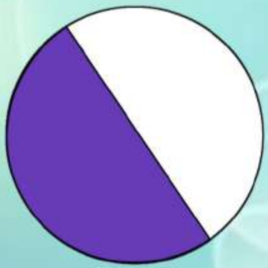

$$= \frac{1}{2}$$

भिन्न होते खंडित हिस्से,
अंश बटा हर में हैं लिखते।
तीन तरह के भिन्न बताते,
सम, विषम और मिश्र कहलाते ॥

एक रोटी के दो सम भाग,
एक बटा दो कहलाता है।
चार बराबर भाग करो तो,
एक चौथाई बन जाता है ॥

चौथाई

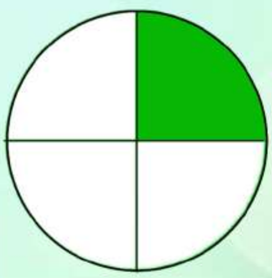

$$= \frac{1}{4}$$

पैटर्न

हर जगह है पैटर्न की भरमार,
ढूंढते रहो बाजार-बाजार।
कपड़ों में ढूंढो या जूतों में,
मिलती है पैटर्न की भरमार।

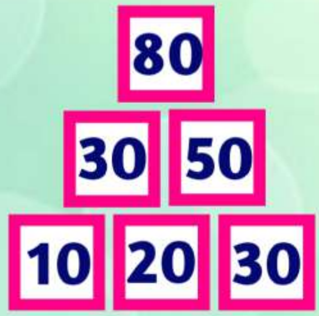

पेन में कितने पैटर्न,
कोई ढक्कन वाला कोई चूचू खटके वाला।
पैटर्न वही है,
बस फैशन नयी है।

संख्याओं और अक्षरों से भी पैटर्न बने,
इनका प्रयोग कर बनाओ अपना पैटर्न।

ब्लॉकों से अलग-अलग पैटर्न बनाओ,
दिमाग लगाकर उसे जमाओ।

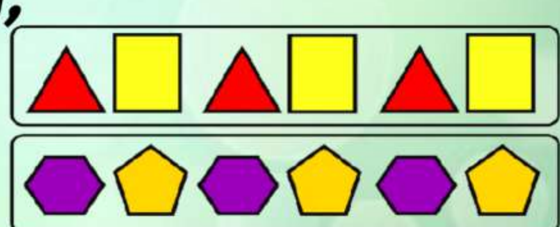

पहाड़े और बँटवारे

भाग जीवन का हिस्सा है,
गणित का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
हर चीज में भाग होता है,
कहीं ज्यादा तो कहीं कम होता है॥

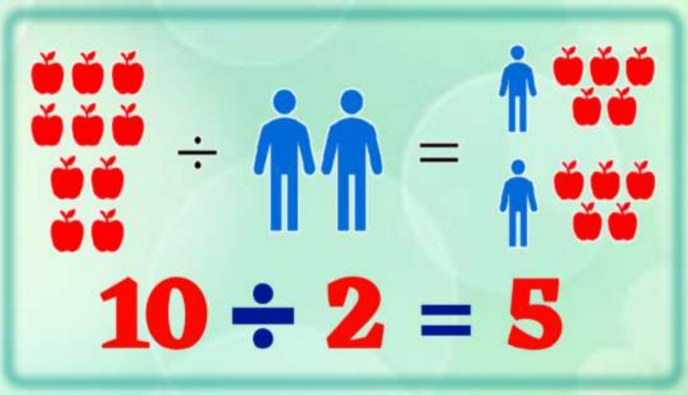

दैनिक जीवन में भाग जरूरी,
इसके बिना गणित अधूरी।
हिसाब-किताब में गुणा-भाग जरूरी।
इसके बिना गणित की हर संक्रिया रहे अधूरी॥

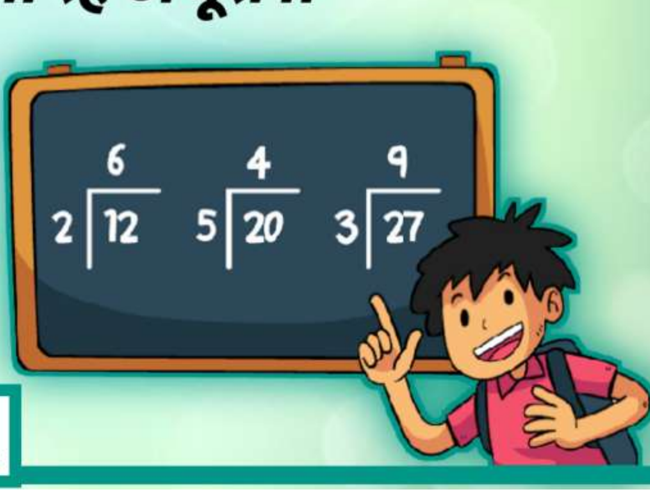

जब पहाड़े हो याद।
तो झटपट दो भाग॥

कितना भारी ? कितना हल्का ?

कितना हल्का कितना भारी,

समझ में न आए यह बीमारी।

रुई है देखो कितनी हल्की,

उससे बनती गद्दी भारी।

पत्तियां है देखो कितनी हल्की,

मगर पेड़ है कितना भारी।

पढ़ाई लगती हमेशा हल्की,

परीक्षा देना लगता भारी।

किसी बात को हल्का न समझो बच्चों,

हर बात होती अपने आप में भारी।

खेत और बाड़

यह गणित का एक प्राचीन भाग,
ज्यामिति है बच्चों ! इसका नाम ।
ज्यामिति का हम देंगे ज्ञान,
तुमको करवाएंगे इसका भान ।।

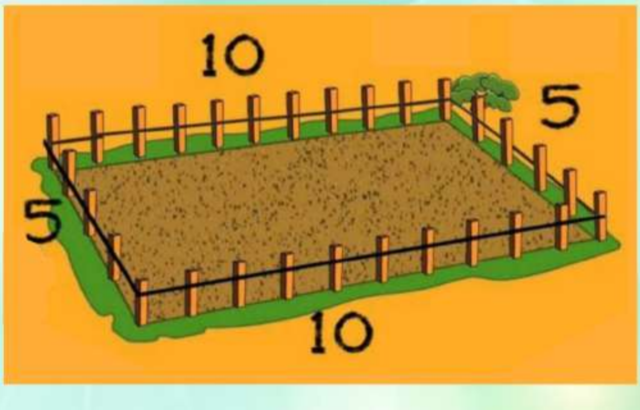

ज्यामितीय आकृतियों का जाल,
तुमको समझाए इसका हाल ।
खेत, खलिहान, भूखंड का मापन,
करते ज्यामिति से हम हरदम ।।

गणित के ज्ञानी संत कहें,
ज्यामिति गणित का मंत्र कहें ।
हर आकृति ज्ञान सिखाती है,
नयी दिशा दिखलाती है ।।

स्मार्ट चार्ट

दिनभर तुमने टी० वी० देखा,
समय का भी तुम करो हिसाब।
आओ जानें कितने घंटे देखा?
स्मार्ट चार्ट बना करो हिसाब॥

टी० वी० देखते हुए भी तुम,
सीख सकते जोड़, घटा, गुणा, भाग।
किसने, कितने घंटे, क्या देखा ?
स्मार्ट चार्ट से कर लो हिसाब॥

सप्ताह में बच्चों द्वारा कितने घंटे टी०वी० देखा गया?

बच्चों के नाम	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार	कुल समय (घंटे)
राजू	2	3	2	2	1	2	4	16
मीना	1	2	3	2	3	3	5	19
सोनू	2	1	0	2	3	3	4	15

किसने क्या खेला व खाया ?
इसका भी रख सकते हिसाब।
स्मार्ट चार्ट में नोट करो तुम,
कर लो अभी हिसाब-किताब॥

आज बच्चों ने कौन सा खेल खेला और क्या खाया?

बच्चों के नाम	खेल			भोजन		
	क्रिकेट	कबड्डी	लूडो	दाल	चावल	रोटी
राम	✓	✓	✓	✓	✗	✓
श्याम	✓	✓	✗	✓	✓	✓
गीता	✓	✗	✓	✓	✓	✗

जब से मैंने स्मार्ट चार्ट बनाया,
पूरे दिन का रखा हिसाब।
गणित भी मेरी अच्छी हो गई,
दिनचर्या भी बनी है खास॥